अक्तूबर - दिसंबर 2022
अंक - 193

अनुवाद
Anuvad

भारतीय अनुवाद परिषद
Translators' Association of India

अक्टूबर-दिसंबर 2022 अंक : 193

अनुवाद

यू.जी.सी. प्रमाणित पत्रिका सूची (केयर लिस्ट) में शामिल शोध पत्रिका

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय के आंशिक वित्तीय सहयोग से प्रकाशित

संस्थापक संपादक
स्व. डॉ. गार्गी गुप्त

संपादक मंडल

श्री कृष्ण गोपाल अग्रवाल
श्रीमती संतोष खन्ना
डॉ. हरीश कुमार सेठी
प्रो. पूरनचंद टंडन
डॉ. कुसुम अग्रवाल
श्री जैमिनि कुमार श्रीवास्तव

संपादक

नीता गुप्ता
शुचिता मीतल

सहायक संपादक

उर्मिला गुप्ता
मीरा बिष्ट

भारतीय अनुवाद परिषद
Translators' Association of India

अनुवाद : अनुवाद कला, विज्ञान एवं शिल्प की त्रैमासिक पीयर रिव्यूड और रेफ़रीड शोध पत्रिका (यू.जी.सी. प्रमाणित पत्रिका सूची (केयर लिस्ट) में शामिल शोध पत्रिका)
पंजीकरण संख्या : 10532/64 **ISSN** : 0003-6218

© भारतीय अनुवाद परिषद (Translators' Association of India)

आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचार परिषद तथा संपादक मंडल की नीतियों एवं विचारों को प्रतिबिंबित करें।

संस्थापक संरक्षक : स्व. डॉ. सुरेश चंद गुप्त **संस्थापक संपादक** : स्व. डॉ. गार्गी गुप्त

संपादक मंडल : श्री कृष्ण गोपाल अग्रवाल, प्रो. पूरनचंद टंडन, श्रीमती संतोष खन्ना डॉ. कुसुम अग्रवाल, डॉ. हरीश कुमार सेठी, श्री जैमिनि कुमार श्रीवास्तव

परामर्श मंडल : श्री ब्रजकिशोर शर्मा (विधि), डॉ. रणजीत साहा (बांग्ला), प्रो. वी.बै. ललिताम्बा (कन्नड़), प्रो. चमनलाल सप्रू (कश्मीरी), प्रो. जी. गोपीनाथन (मलयालम), प्रो. सूर्यकांत दीक्षित (अनुवाद-विज्ञान), डॉ. श्याम सिंह 'शशि' (समाजशास्त्र), प्रो. शंकर लाल पुरोहित (ओड़िया)

संपादक : नीता गुप्ता, शुचिता मीतल

सहायक संपादक : उर्मिला गुप्ता, मीरा बिष्ट

व्यवस्थापक संपादक : श्री चारु शेखर गुप्ता

सहयोग : सुश्री गीता, श्री राकेश कुमार श्रीवास्तव

मुद्रक : अर्चना प्रिंटर्स, 1/1955, गली नं. 22-ए, ईस्ट राम नगर, शाहदरा, दिल्ली-110032
मोबाइल : 9811357243
ई-मेल : archanaprinter2009@gmail.com, hemadrprakashan@gmail.com

प्रकाशक : भारतीय अनुवाद परिषद, 24 स्कूल लेन (बेसमेंट), बंगाली मार्केट, नई दिल्ली-110001

सामान्य अंक : 100/-रुपए, **वार्षिक शुल्क** : 500/-रुपए (व्यक्तिगत), 1,000/-रुपए (संस्थागत)
आजीवन शुल्क : 5,000/-रुपए (व्यक्तिगत), 10,000/-रुपए (संस्थागत)

ANUVAD

A Quarterly on the art, science and craft of translation
EDITORS : NEETA GUPTA, SHUCHITA MITAL

Published by Bhartiya Anuvad Parishad (Translators' Association of India)
24, School Lane (Basement), Bengali Market, New Delhi-110 001 (India)
Tel.: 91-11-23327202, 23352278
Web : www.bhartiyaanuvadparishad.org
E-mail : bap.1964@gmail.com

अनुक्रम

जी 20 और अनुवाद के क्षेत्र में नई संभावनाएँ / (संपादकीय) – 5
अनुवाद और राजनीति / **डॉ. श्रीनारायण समीर** – 7
व्यावहारिकता के आलोक में औचित्यपूर्ण विवेचन (पुस्तक समीक्षा) / **डॉ. हरीश कुमार सेठी** – 13
मोर (हरियाणवी कहानी) / **प्रो. रूप देवगुण (अनु. डॉ. अशोक कुमार 'मंगलेश')** – 22
कोरिया में हिंदी और अनुवाद : वर्तमान और भविष्य / **कृष्णकांत झा** – 27
'जनगीता' और 'मानसगीता' में अभिव्यक्त बचपन की अनुवाद-कला / **डॉ. जितेश कुमार** – 32
नवसंचार तंत्र के विकास में अनुवाद की भूमिका / **विकास शुक्ल** – 45
ग़ज़ल (उर्दू ग़ज़ल) / **शेख गुलाम हमदानी मुसहफ़ी (अनु. मोहम्मद अवैस)** – 49
किसान मजदूरों की बेटियाँ (मराठी कविता) / **शेत मजूरच्या पोरी (अनु. मीरा भिखडे)** – 51
मातृभाषा (कविता) / **डॉ. राम प्रवेश रजक** – 54
माटी की मूरतें (बांग्ला से अनूदित कविता) / **नीरेंद्र नाथ चक्रवर्ती (अनु. डॉ. राम प्रवेश रजक)** – 55
रवींद्रनाथ टैगोर से एक वार्तालाप / **संतोष खन्ना** – 56
जनपदोध्वंसनीयं (संस्कृत अनूदित नाटक) / **डॉ. रंजित एम.** – 62
कथा लेखिका प्रतिभा राय के साहित्य की वैश्विक प्रसिद्धि में अनुवाद की भूमिका / **पी. अंजली** – 65
अनुवाद के विभिन्न अभिगम / **डॉ. श्रीनिकेत कुमार मिश्र एवं डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी** – 71
आचार्य रामचंद्र शुक्ल का अनुवाद-कर्म / **हनुमान प्रसाद शुक्ल** – 78
कोश प्रविष्टियों के विविध रूप और अनुवाद / **डॉ. कुलभूषण शर्मा** – 87

डॉ. रंजित एम.

जनपदोध्वन्सनीयं

(चरकसंहिता के जनपदोध्वन्सनीयं अध्याय का नाट्य रूपांतर कोरोना महामारी के अवसर पर लोगों को जागरूक बनाने के लिए आयुर्वेद डॉक्टरों को मंचन करने के लिए संस्कृत से हिंदी में अनूदित किया गया)।

'चरक संहिता' ईसाई युग दूसरी शताब्दी में रची गई थी। इसके उपदेशक अत्रिपुत्र पुनर्वसु, ग्रंथकर्ता अग्निवेश और प्रति संस्कारक चरक थे। इस रचना का एक अध्याय है 'जनपदोध्वन्सनीयं'। इसमें एक महामारी या ज्ञानपदिक रोग संपूर्ण जनपद का सर्वनाश किस प्रकार कर रहे हैं। इसके बारे में विस्तृत चर्चा हुई है। यह रचना उस अध्याय के आधार पर रची गई है।

देश – पांचाल
स्थान – गंगा तट
देवध्य में काम्पिल्य राजधानी
ग्रीष्म ऋतु के एक सौम्य
गुरु आत्रेय मुनि और शिष्य अग्निवेश टहल रहे हैं।
शंका निवारण की वेला
दृश्यों को अंतर्दृष्टि के रूप में बदलने वाला छोटा संवाद।

आत्रेय महर्षि ने एक पल के लिए रुक कर अपने शिष्य अग्निवेश से कहा।

'सौम्य, तारे, ग्रह, गण, शशि, स्वी, अनिल और अनल के संचार में असमान्यता महसूस कर रहे हैं। ऋतु परिवर्तन की भी संभावना है। यह खतरे भी सूचना दे रहे हैं। कम समय में हमारी पृथ्वी के पेड़ और पौधे अपने रस और गुण खोकर बर्बाद हो जाएँगे। अगर ऐसा है तो किसी एक महामारी के कारण हमारे जनपद के सभी लोगों के मिट जाने की संभावना भी है।'

गुरु की बात सुनकर अग्निवेश सन्न रह जाते हैं।

"इसलिए, अग्निवेश हमें कुछ करना है, समय बहुत कम है।"

"पेड़-पौधों से रस और गुण नष्ट हो जाने से पहले हमें औषधियाँ इकट्ठा करनी होगी।"

"धरती की उर्वरता कम हो रही है।"

"यह अलसता की वेला नहीं है।"

अग्निवेश बिना आँखें मूँदे गुरु की बातों पर ध्यान देते रहे।

"अभी हम जिन जड़ी-बूटियों का संचयन करेंगे वे पूरी उपयोगी रहेंगी। उन जड़ी-बूटियों के सहारे हमारे इंतजार करने वाले और हम इंतजार करने वाले मरीजों को बीमारी से विमुक्त कर पाएँगे। हाँ, जनपद का सर्वनाश करने वाले महामारी से मानव कुल की रक्षा करने का यही तरीका है।"

"ऐसा करेंगे, गुरुदेव।" अग्निवेश ने कहा।

"मार, उसको संदेह आने लगा।"

"गुरुदेव, इस जनपद के मानव, वे भिन्न-भिन्न तरह के खाना खाने वाले, तरह-तरह के शरीर प्रकृति वाले, उनकी तन और मन की क्षमताएँ अलग-अलग है। तरह-तरह के व्यवहार करने वाले हैं। यहाँ के लोग और उनकी उम्र भी अलग-अलग है। ऐसे लोग एक ही बीमारी के शिकार कैसे हो पाएँगे? इस तरह की बीमारी के बारे में आपने तो अभी बताया भी नहीं?"

"अग्निवेश, सही कहा है तुमने। इस जनपद के लोग अलग-अलग हैं। उनकी शारीरिक क्षमताएँ, शील, विचार सब अलग हैं। मगर यहाँ के वायु, जल, देश और काल उन सभी को एक ही डोर में पिरोए हुए हैं। देश से तात्पर्य पर्यावरण है। जहाँ के वायु, जल, देश और काल दूषित-प्रदूषित हैं, वहाँ वैयक्तिक विषमताएँ प्रासंगिक नहीं होती। इससे बचने के लिए उपयुक्त औषधियाँ होनी चाहिए।

कूर्म बुद्धि वाले अग्निवेश से आत्रेय मुनि कहते रहे।

"दूषित होने पर जल, वायु से ज्यादा देश जल से ज्यादा और समय देश से ज्यादा हनिकारक हो सकते हैं।"

"इसके उपचार के रूप में औषधियाँ दे सकते हैं, यह मानता हूँ। इसके अलावा क्या-क्या उपचार हम कर पाएँगे?" अग्निवेश ने पूछा।

"शरीर को बीमारियों एवं कुपोषण द्वारा छोड़े गए विषैले पदार्थों से निर्मल बनाने के लिए पंचकर्म चिकित्सा। विधिके अनुसार रसायन का प्रयोग। सच पर अटल रहना, भूत, दया, दान-धर्म, बली चढ़ाना, देवताओं की पूजा करना, सदाचार पर ध्यान देना, समूहिक दूरी का पालन करना ये सब अपना सकते हैं। साथ-ही-साथ सुरक्षित जनपदों की ओर का प्रवास, सही ज्ञान अपनाना, ज्ञानियों के साथ सत्संग, धार्मिक रचनाओं के महर्षियों की जीवात्माओं की कहानियाँ सुनना भी श्रेयस्कर होगा।"

गुरु का उपचार सुनते ही अग्निवेश ने सिर हिलाया और पूछा।

"गुरु जी एक जनपद के वायु, देश जल और काल कैसे प्रदूषित होते हैं?"

शिष्य का सवाल सुनकर गुरु ने कहा।

"वत्स, इसका मूल कारण तो अधर्म ही है।"

उस जवाब को सुनकर अग्निवेश काँपने लगा।

गुरु बोलते रहे, "अविवेक से पाप वृत्तियों का और पाप वृत्तियों से अधर्म का जन्म होता

है। प्रदेश, शहर, गाँव, जनपद के अधिकारी धर्मच्युत होकर शासन करते वक्त उनके अनुचर, सखा और बंधु अधर्म के बीजों को पालने में मग्न रहते हैं। अधर्म का वृक्ष बड़ा होने पर धर्म वहाँ टिक नहीं पाएगा। जिस देश में धर्म नहीं है देवता वहाँ से दूर रह जाते हैं। वहाँ ऋतु भेद होता है। बादल बे-वक्त बरसते हैं। हवा रूढ़ हो जाती है। मिट्टी ऊसर बन जाती है। औषधियाँ अपने गुण खो देती है। इस तरह स्पर्शन में, खाद्य वस्तु में, पेय, इल में विष फैलने के कारण जनपद मृत्यु के शिकार बन जाते हैं।"

गुरुनाथ आगे बोले, "हथियारों के कारण जनपदों का ह्रास हम देख रहे हैं। इसका भी मूल कारण अधर्म ही है। लालच, गुस्सा, अविवेक एवं दुरभिमान से मद-मस्त लोग अपने से भी कम ताकत होने वालों को कुचलकर, अपने आप पर चढ़ाई करते हुए दूसरों की हत्या करके, दूसरों के लालच के शिकार बनकर अपने आपको मृत्यु को सौंपकर आगे बढ़ते हैं। इस प्रकार जनपद का अस्तित्व मिट जाता है।"

"अधर्म, कभी-कभी तद्भव अंशीयों के कारण रक्षोगण के रूप में या क्रूर जीवों के रूप में जनपद का सर्वनाश कर डालते हैं।"

आत्रेय मुनि अपनी बात जारी रखें – अधर्म की कहानियाँ, अधर्म बढ़ने के कारण, अधर्म के कारण लुप्त हुए जनपदों की कहानियाँ। वे चलते रहे। पर्दे के पीछे से आने के लिए तैयार हो रहे जनपद ध्वन्सों की भविष्यवाणी करते हुए।

क्रमशः वही कहानी आज हमारे पास पहुँच रही है। वर्तमान काल में, विध्वंसन के विषैले बीज की जीत होने वाले वर्तमान काल में। न तो देश पांचाल है, न जगह गंगा तट। मगर देश और काले के परे होकर बताने वाले आत्रेय मुनि की वाणी यहीं कहीं गूँज रही है। गुरु की वाणी सुनते हुए अग्निवेश साथ चल रहे हैं। वे लोग अब भी बातचीत में डूबे हुए हैं। सुन रहे हैं क्या अधर्म के वह किस्से?

❑

पी. अंजली

कथा लेखिका प्रतिभा राय के साहित्य की वैश्विक प्रसिद्धि में अनुवाद की भूमिका

साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका सर्वदा महत्वपूर्ण रही है। न केवल एक सेतु के रूप में अनुवाद सभी भाषाओं को आपस में जोड़ कर रखने की क्षमता रखता है बल्कि इसके माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी संभवतः निरंतर होता रहता है। हमारे भारत जैसे बहुभाषी देश में भाषिक समन्वयता स्थापित करने में भी 'अनुवाद' का आधार अहम रूप से देखा जा सकता है। यहाँ संविधान की आठवीं अनुसूची में अधिसूचित 22 भाषाओं के अलावा सभी राज्यों की अपनी-अपनी प्रादेशिक उपभाषाएँ तथा बोलियाँ-उपबोलियाँ सम्मिलित हैं। सभी भाषाओं का अपना-अपना इतिहास व समृद्ध साहित्यिक रचना संसार भी है। समावेशी रूप से इन सभी भाषाओं में रचे गए साहित्य को ही भारतीय साहित्य कहा जाता है। वस्तुतः जब यही भारतीय साहित्य अपने प्रादेशिक सीमाओं से निर्बद्ध होकर अनुवाद के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय फलक तक पहुँचता है तो वह विश्व साहित्य कहलाता है। अतः किसी भी भाषा के साहित्य की वैश्विक प्रसिद्धि में अनुवाद का श्रेय मुख्यतः देखा जा सकता है।

साहित्य जितना विस्तृत रूप से पाठक वर्ग तक अग्रसारित होता है उसकी श्रेष्ठता व सार्थकता भी उतनी बढ़ जाती है। ऐसे भी साहित्य और भाषा को किसी तय परिधि में बाँध पाना असंभव है। इसका कारण यह है कि एक ओर जहाँ भाषा संस्कृति की संवाहक होती है तो वहीं साहित्य उसी संस्कृति को दर्शाने का एकमात्र केनवास। अतः भाषा हो, साहित्य हो या संस्कृति अथवा समाज, यह सब एक-दूसरे के परिपूरक होते हैं। साहित्यकार केवल अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए इनमें अपनी अनुभूतिपरक ऊर्जा भरता है और समाज को जागरूक करने का बीड़ा उठाता है। यही कारण है कि साहित्य को समाज की प्रति छवि भी कहा जाता है। यह जरूरी नहीं कि साहित्य सृजन कोई निर्दिष्ट देश, काल और वातावरण के अनुरूप ही होता हो। यह नित्य परिवर्तित होता है जिस कारण कोस-कोस में भाषागत वैविध्यता भी दृश्यमान होती है। इन तमाम विविधताओं के बावजूद अगर किसी साहित्य को विश्व साहित्य होने का दर्जा मिलता है तो इसका एकमात्र आधार अनुवाद ही है। अतः अनुवाद द्वारा किसी रचना को बहुमुखरित और अंतरपठनीय होने का अवसर प्राप्त होता है फलस्वरूप जिसके वह वैश्विक रूप से सुभाषित होता रहता है।